बी.एस.ओ.सी.-132 : भारत का समाजशास्त्र
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BAG/ BAM
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-132**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी. -132 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नां के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. भारत में विविधता में एकता की अवधारणा की विवेचना कीजिए। विविधता के प्रमुख स्वरूपों तथा राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने वाली शक्तियों का परीक्षण कीजिए। 20

2. भारत में परिवार की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। समकालीन भारतीय समाज में परिवार के बदलते प्रतिरूपों की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. भारत में जनजातियों की विशिष्ट विशेषताओं की व्याख्या कीजिए तथा जनजातीय आजीविका से संबंधित प्रमुख मुद्दों की चर्चा कीजिए। 10

4. भारत में दलित आंदोलनों के उद्भव एवं विकास की चर्चा कीजिए। प्रमुख नेताओं के योगदान के विशेष संदर्भ में उत्तर दीजिए। 10

5. सांप्रदायिकता तथा धर्मनिरपेक्षता में अंतर स्पष्ट कीजिए। समकालीन भारत में इनके महत्व की चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. परिवर्तनशील भारत 06

7. भारतीय समाज में वर्ग निर्माण 06

8. पितृसत्ता और मातृसत्ता 06

9. लैंगिक आधारित आंदोलन 06

10. नृजातीय आंदोलन 06

1. भारत में विविधता में एकता की अवधारणा की विवेचना कीजिए। विविधता के प्रमुख स्वरूपों तथा राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने वाली शक्तियों का परीक्षण कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

प्रस्तावना और अवधारणा

भारत एक बहुलवादी समाज है जहाँ अनेक भाषाएँ, आस्थाएँ, जातीय समुदाय, रीति-रिवाज और जीवन-पद्धतियाँ सहअस्तित्व में हैं। 'विविधता में एकता' का आशय यह नहीं है कि सभी लोग एक जैसा सोचते, बोलते या रहते हैं; इसका अर्थ यह है कि विभिन्न सामाजिक समूह अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हुए व्यापक समाज और राजनीतिक समुदाय के सदस्य होते हैं। एकता, समानता या एकरूपता का पर्याय नहीं है। वह साझा संस्थाओं, पारस्परिक निर्भरता, सहिष्णुता, ऐतिहासिक संपर्क तथा संवैधानिक नागरिकता के आधार पर निर्मित होती है। भारतीय समाज को समझने के लिए इसकी आंतरिक भिन्नताओं और उन्हें जोड़ने वाले संबंधों को एक साथ देखना आवश्यक है।

विविधता के प्रमुख स्वरूप

भाषायी विविधता भारतीय जीवन की स्पष्ट विशेषता है। हिंदी, बंगाली, तमिल, मराठी, तेलुगु, असमिया और अनेक अन्य भाषाओं तथा बोलियों के अपने साहित्य और सांस्कृतिक संसार हैं। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, पहचान और सामुदायिक स्मृति का वाहक भी है। संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त भाषाएँ इस बहुभाषिकता का एक संस्थागत रूप हैं। भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन ने अनेक क्षेत्रीय आकांक्षाओं को लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के भीतर स्थान प्रदान किया; किंतु भाषाई गौरव कभी-कभी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और तनाव का आधार भी बन सकता है।

धार्मिक विविधता में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा अनेक स्थानीय आस्था-परंपराओं के लोग शामिल हैं। पूजा-पद्धतियाँ, त्योहार और जीवन-संस्कार अलग होने पर भी साझा सार्वजनिक स्थलों, पड़ोस, व्यवसाय और सांस्कृतिक संपर्क में सहयोग के अनेक उदाहरण मिलते हैं। संत-भक्ति